भारतीय ज्योतिष, मनोविज्ञान और मानव चेतना

दार्शनिक, सांस्कृतिक और वैज्ञानिक विमर्श

ज्योतिषाचार्य
डॉ. तेजस्कर पाण्डेय

भारतीय ज्योतिष विशेष रूप से इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह केवल घटनाओं की भविष्यवाणी नहीं करता, बल्कि जीवन को धर्म, कर्म, समय, चेतना और ब्रह्माण्डीय व्यवस्था के संदर्भ में देखने का दृष्टिकोण प्रदान करता है . यही कारण है कि ज्योतिष भारतीय संस्कृति में केवल एक विद्या नहीं बल्कि जीवनदर्शन के रूप में प्रतिष्ठित रहा है . आधुनिक शोध यदि संतुलित और गंभीर दृष्टि से किया जाए तो ज्योतिष मानव चेतना और सांस्कृतिक अनुभवों को समझने का एक महत्वपूर्ण माध्यम सिद्ध हो सकता है .

भारतीय ज्योतिष केवल भविष्यवाणी की पद्धति नहीं है, बल्कि यह मानव जीवन, मानसिक संरचना, चेतना, सामाजिक व्यवहार तथा ब्रह्माण्डीय व्यवस्था को समझने का एक अत्यंत प्राचीन और विकसित ज्ञानतंत्र है. मेरा यह मानना है कि ज्योतिष को केवल अंधविश्वास अथवा भाग्यवाद के रूप में देखना उसके व्यापक दार्शनिक और सांस्कृतिक स्वरूप को सीमित कर देना है. वास्तव में ज्योतिष मानव सभ्यता के उस गहन प्रयास का परिणाम है जिसके माध्यम से मनुष्य ने स्वयं को, प्रकृति को और ब्रह्माण्ड को एक-दूसरे से जुड़ी हुई शक्तियों के रूप में समझने का प्रयास किया. मानव इतिहास के प्रारम्भ से ही आकाश, सूर्य, चन्द्रमा, ग्रहों और नक्षत्रों ने मनुष्य की चेतना को आकर्षित किया है. आदिम मानव ने यह अनुभव किया कि प्रकृति में होने वाले परिवर्तन, ऋतुओं का क्रम, समुद्र की ज्वार-भाटा, कृषि की उर्वरता, पशुओं का व्यवहार तथा मानव जीवन की अनेक घटनाएँ किसी न किसी प्रकार आकाशीय गतिविधियों से सम्बद्ध प्रतीत होती हैं. यही अनुभव आगे चलकर ज्योतिष के रूप में विकसित हुआ.

विश्व की प्राचीन सभ्यताओं में ज्योतिष का विशेष महत्व रहा है. मेसोपोटामिया, मिस्र, चीन, यूनान तथा भारत में ग्रहों और तारों की गतिविधियों का गहन अध्ययन किया गया. मेसोपोटामिया में पुरोहित वर्ग ग्रहों की गतियों को देवताओं की इच्छा का संकेत मानता था और युद्ध, कृषि, राज्य तथा सामाजिक जीवन से सम्बद्ध निर्णय इन्हीं संकेतों के आधार पर लिए जाते थे. बाद में बेबीलोनियन सभ्यता ने राशिचक्र की अवधारणा विकसित की, जिसने आगे चलकर सम्पूर्ण विश्व की ज्योतिषीय परम्पराओं को प्रभावित किया. मिस्र में सूर्य और तारों को दैवीय शक्ति का प्रतीक माना गया, जबकि चीन में ज्योतिष को राजकीय व्यवस्था तथा साम्राज्य की स्थिरता से जोड़ा गया. इन सभी सभ्यताओं में ज्योतिष केवल व्यक्तिगत जीवन का विषय नहीं था, बल्कि सामाजिक व्यवस्था, शासन, धर्म और संस्कृति का महत्वपूर्ण आधार था. यह तथ्य इस बात को स्पष्ट करता है कि ज्योतिष मानव सभ्यता की सामूहिक चेतना में अत्यंत गहराई से समाहित रहा है.

भारतीय ज्योतिष का स्वरूप अत्यंत विशिष्ट, दार्शनिक तथा वैज्ञानिक है. संस्कृत में 'ज्योतिष' शब्द का अर्थ ही 'प्रकाश का विज्ञान' माना गया है. वेदांग ज्योतिष से लेकर बृहत्पाराशर होराशास्त्र, बृहत्जातक, फलदीपिका, सारावली तथा अन्य ग्रंथों तक भारतीय ज्योतिष ने समय, ग्रह, कर्म और चेतना के संबंध को अत्यंत सूक्ष्म रूप से व्याख्यायित किया है. भारतीय परम्परा में यह माना गया कि मानव केवल भौतिक शरीर नहीं है, बल्कि वह एक चेतनात्मक सत्ता है जिसका संबंध सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड से है. 'यत् पिण्डे तत् ब्रह्माण्डे' की अवधारणा इसी सत्य को व्यक्त करती है कि सूक्ष्म और स्थूल जगत परस्पर सम्बद्ध हैं. जन्म के समय ग्रहों और नक्षत्रों की स्थिति व्यक्ति के जीवन की संभावनाओं, प्रवृत्तियों, मानसिक संरचना और कर्मफल को प्रभावित करती है. इसी आधार पर जन्मकुण्डली का निर्माण किया जाता है. जन्मकुण्डली को केवल भविष्य कथन का साधन नहीं, बल्कि व्यक्ति की मानसिक और आध्यात्मिक संरचना का दर्पण भी माना जा सकता है.

भारतीय ज्योतिष में समय को अत्यंत महत्वपूर्ण माना गया है. मुहूर्त, नक्षत्र, योग, करण तथा ग्रहों की स्थिति के आधार पर शुभ और अशुभ समय का निर्धारण किया जाता है. विवाह, गृहप्रवेश, संस्कार, यात्रा, राज्याभिषेक और धार्मिक अनुष्ठानों के लिए शुभ समय का चयन भारतीय संस्कृति की स्थायी परम्परा बन चुका है. इसका आधार यह विचार है कि प्रत्येक समय की अपनी विशिष्ट ऊर्जा और प्रभाव होता है. आधुनिक विज्ञान भी यह स्वीकार करता है कि प्रकृति में समय और लय का अत्यंत महत्व है. जैविक घड़ियाँ, ऋतुचक्र, चन्द्रचक्र तथा सौर प्रभाव मानव जीवन को प्रभावित करते हैं. भारतीय ज्योतिष इसी व्यापक ब्रह्माण्डीय लय को मानव जीवन से जोड़ने का प्रयास करता है. इस दृष्टि से ज्योतिष केवल धार्मिक विश्वास नहीं बल्कि समय और चेतना के संबंध का अध्ययन भी है.

मनोविज्ञान और ज्योतिष के संबंध पर विचार करने पर यह स्पष्ट होता है कि दोनों ही विधाएँ मानव व्यक्तित्व और व्यवहार को समझने का प्रयास करती हैं. मनोविज्ञान मानव मस्तिष्क, भावनाओं, अवचेतन मन और व्यवहार का अध्ययन करता है, जबकि ज्योतिष ग्रहों, राशियों और प्रतीकों के माध्यम से इन्हीं आन्तरिक संरचनाओं को अभिव्यक्त करता है. जन्मकुण्डली को यदि प्रतीकात्मक भाषा के रूप में देखा जाए तो यह व्यक्ति की मानसिक प्रवृत्तियों, आन्तरिक संघर्षों, भय, इच्छाओं और संभावनाओं का एक सूक्ष्म मानचित्र प्रतीत होती है. उदाहरणस्वरूप चन्द्रमा को भावनात्मक संवेदनशीलता, मातृत्व और मानसिक स्थिरता का प्रतीक माना जाता है, मंगल को ऊर्जा और संघर्ष का, बुध को बुद्धि और संवाद का, गुरु को ज्ञान और विस्तार का तथा शनि को अनुशासन, सीमाओं और कर्मफल का प्रतिनिधि माना जाता है. इस प्रकार ग्रहों की भाषा मानव मानस की गहन परतों को समझने का प्रतीकात्मक माध्यम बन जाती है.

आधुनिक मनोवैज्ञानिक ज्योतिष ने ज्योतिष की भूमिका को एक नई दिशा प्रदान की है. अब ज्योतिष केवल भविष्य बताने का माध्यम नहीं रह गया है, बल्कि आत्मविश्लेषण, आत्मबोध और व्यक्तित्व विकास का साधन भी बन गया है. व्यक्ति अपनी जन्मकुण्डली के माध्यम से अपनी शक्तियों, कमजोरियों, मानसिक अवरोधों, भय और संभावनाओं को समझने का प्रयास करता है. ग्रहों की दशाएँ, गोचर और योग जीवन में आने वाले मानसिक, भावनात्मक तथा सामाजिक परिवर्तनों के संकेतक माने जाते हैं. इस दृष्टि से ज्योतिष व्यक्ति को आत्मपरिवर्तन और आत्मविकास की दिशा में प्रेरित करता है. यह व्यक्ति को यह समझने में सहायता देता है कि जीवन केवल बाहरी घटनाओं का क्रम नहीं, बल्कि आन्तरिक चेतना की यात्रा भी है.

आधुनिक समाज में ज्योतिष की बढ़ती लोकप्रियता भी अत्यंत महत्वपूर्ण है. विज्ञान और प्रौद्योगिकी के युग में भी करोड़ों लोग ज्योतिष की ओर आकर्षित हैं. इसका कारण केवल भविष्य जानने की जिज्ञासा नहीं है, बल्कि मानसिक सुरक्षा, आत्मविश्वास, सांस्कृतिक पहचान और आध्यात्मिक अर्थ की खोज भी है.

गंगा सप्तमी और गंगा दशहरा मनाएं एक साथ

हिंदू धर्मग्रंथों में मां गंगा को केवल एक नदी नहीं, बल्कि जीवन और मोक्ष देने वाली देवी माना गया है.गंगा से जुड़े दो प्रमुख पर्व गंगा सप्तमी और गंगा दशहरा हर साल श्रद्धा के साथ मनाए जाते हैं.हालांकि कई लोग इन दोनों त्योहारों को एक ही मान लेते हैं, लेकिन धार्मिक मान्यताओं के अनुसार दोनों का महत्व अलग है.

गंगा सप्तमी को मां गंगा के पुनर्जन्म का दिन माना जाता है.पौराणिक कथा के अनुसार, जब गंगा के तेज बहाव से ऋषि जह्नु का आश्रम प्रभावित हुआ तो उन्होंने क्रोधित होकर गंगा को पी लिया.बाद में राजा भगीरथ की प्रार्थना पर ऋषि ने गंगा को अपने कान से बाहर निकाला.इसी कारण मां गंगा को 'जाह्नवी' भी कहा जाता है और इस दिन को गंगा सप्तमी के रूप में मनाया जाता है.

वहीं गंगा दशहरा वह पावन दिन है जब मां गंगा पहली बार स्वर्ग से पृथ्वी पर अवतरित हुई थीं.मान्यता है कि राजा भगीरथ ने अपने पूर्वजों की आत्मा की शांति के लिए कठोर तपस्या की थी.उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर ब्रह्मा जी ने मां गंगा को धरती पर भेजने का निर्णय लिया.लेकिन गंगा का वेग इतना प्रचंड था कि पृथ्वी उसके प्रभाव को सहन नहीं कर सकती थी.तब भगवान शिव ने गंगा को अपनी जटाओं में धारण कर उनके प्रवाह को नियंत्रित किया.इसके बाद मां गंगा धरती पर अवतरित हुईं और इसी दिन को गंगा दशहरा कहा गया. साल 2026 में गंगा दशहरा 25 मई को मनाया जाएगा.इस बार यह पर्व अधिक मास में पड़ रहा है, इसलिए इसका धार्मिक महत्व कई गुना बढ़ गया है.शास्त्रों के अनुसार इस दिन गंगा स्नान, दान-पुण्य और पूजा करने से दस जन्मों के पाप समाप्त हो जाते हैं.यदि कोई व्यक्ति गंगा नदी तक नहीं पहुंच सकता, तो घर में स्नान के पानी में गंगाजल मिलाकर स्नान करना भी पुण्यदायी माना गया है.

> गंगा दशहरा के दिन मां गंगा की पूजा, दीपदान, गंगा स्तोत्र का पाठ और जरूरतमंदों को दान करना विशेष फलदायी माना जाता है.धार्मिक मान्यता है कि इस दिन श्रद्धा से किया गया हर पुण्य कार्य जीवन में सुख, शांति और मोक्ष का मार्ग प्रशस्त करता है.

कृष्ण एकादशी का महत्व और पौराणिक कथा

अधिकमास में आने वाली परमा एकादशी का हिंदू धर्म में विशेष महत्व बताया गया है.यह एकादशी अधिकमास के कृष्ण पक्ष में पड़ती है और इसे पुरुषोत्तमी या कमला एकादशी के नाम से भी जाना जाता है.धार्मिक मान्यता है कि इस व्रत को करने से व्यक्ति के समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं.

पौराणिक कथा के अनुसार धर्मराज युधिष्ठिर ने भगवान श्रीकृष्ण से पूछा कि अधिकमास के कृष्ण पक्ष की एकादशी का क्या नाम है और इसकी विधि क्या है.तब भगवान श्रीकृष्ण ने बताया कि इस एकादशी को परमा एकादशी कहा जाता है.सामान्य रूप से वर्ष में 24 एकादशियां होती हैं, लेकिन जब अधिकमास आता है तब इनकी संख्या बढ़कर 26 हो जाती है. भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को इस व्रत की कथा सुनाते हुए बताया कि प्राचीन समय में काम्पिल्य नगरी में सुमेधा नामक एक धर्मात्मा ब्राह्मण अपनी पत्नी के साथ रहता था.दोनों अत्यंत गरीब थे, लेकिन धर्म और सेवा भाव में कभी कमी नहीं आने देते थे.वे स्वयं भूखे रह जाते, लेकिन अतिथि सेवा पूरी श्रद्धा से करते थे.गरीबी के कारण एक दिन ब्राह्मण सुमेधा ने अपनी पत्नी से कहा कि परिवार का पालन-पोषण करना कठिन हो रहा है, इसलिए उसे धन कमाने के लिए परदेस जाना पड़ेगा. यह सुनकर उसकी पतिव्रता पत्नी दुखी हो गई, लेकिन उसने पति को धर्म और धैर्य का महत्व समझाया. एक महात्मा के मार्गदर्शन में दोनों ने परमा एकादशी का व्रत किया.इस व्रत के प्रभाव से उनके जीवन की दरिद्रता दूर हो गई और उन्हें सुख-समृद्धि प्राप्त हुई.

पूजा घर के लिए शुभ दिशा : ईशान कोण सबसे उत्तम

भारतीय संस्कृति में घर का पूजा घर केवल आस्था का स्थान नहीं, बल्कि सकारात्मक ऊर्जा और मानसिक शांति का केंद्र माना जाता है . वास्तु शास्त्र के अनुसार घर में पूजा घर बनाने के लिए सबसे शुभ दिशा ईशान कोण यानी उत्तर-पूर्व दिशा मानी जाती है . विशेषज्ञों का कहना है कि इस दिशा में मंदिर स्थापित करने से घर में सुख, समृद्धि और आध्यात्मिक वातावरण बना रहता है .

वास्तु विशेषज्ञों के अनुसार उत्तर-पूर्व दिशा को देवताओं का स्थान माना गया है . इसी कारण पूजा, ध्यान और धार्मिक कार्यों के लिए यह दिशा सर्वोत्तम मानी जाती है . मान्यता है कि इस दिशा में पूजा घर

होने से घर के सदस्यों के मन में शांति बनी रहती है और सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह बढ़ता है . साथ ही परिवार में आपसी प्रेम और सामंजस्य भी मजबूत होता है .

पूजा करते समय व्यक्ति का मुख पूर्व या उत्तर दिशा की ओर होना चाहिए . इससे एकाग्रता बढ़ती है और पूजा का आध्यात्मिक प्रभाव अधिक माना जाता है . पूजा घर को हमेशा साफ-सुथरा और शांत स्थान पर बनाना चाहिए . मंदिर को जमीन पर रखने की बजाय लकड़ी या संगमरमर के छोटे मंच पर रखना बेहतर माना जाता है . वास्तु शास्त्र में कुछ दिशाओं को पूजा घर के लिए अशुभ भी बताया गया है . दक्षिण दिशा में मंदिर बनाना उचित नहीं माना जाता . इसके अलावा बाथरूम के पास, सीढ़ियों के नीचे या बेडरूम में पूजा घर बनाने से बचने की सलाह दी जाती है .

सूर्य को जल अर्पित करने की परंपरा आज भी कायम

> मान्यता है कि नियमित रूप से सूर्य को जल चढ़ाने से व्यक्ति को मानसिक शांति, आत्मविश्वास और सुख-समृद्धि की प्राप्ति होती है. विशेष रूप से रविवार और संक्रांति के दिनों में सूर्य पूजा का महत्व अधिक माना जाता है. कई लोग जल अर्पित करते समय 'सूर्याय नमः' या गायत्री मंत्र का जाप भी करते हैं.

भारतीय संस्कृति में सूर्य देव को प्रत्यक्ष देवता माना गया है. यही कारण है कि प्राचीन समय से लोग सुबह स्नान के बाद सूर्य को जल अर्पित करने की परंपरा निभाते आ रहे हैं. धार्मिक मान्यताओं के अनुसार सूर्य को अर्घ्य देने से जीवन में ऊर्जा, सफलता और सकारात्मकता आती है. वहीं वैज्ञानिक दृष्टि से भी इस परंपरा को स्वास्थ्य के लिए लाभकारी माना जाता है. आज भी देशभर में करोड़ों लोग प्रतिदिन उगते सूर्य को जल अर्पित करते हैं और इसे अपनी दिनचर्या का महत्वपूर्ण हिस्सा मानते हैं.

धार्मिक ग्रंथों में सूर्य देव को जीवनदाता और ऊर्जा का स्रोत बताया गया है. मान्यता है कि नियमित रूप से सूर्य को जल चढ़ाने से व्यक्ति को मानसिक शांति, आत्मविश्वास और सुख-समृद्धि की प्राप्ति होती है. विशेष रूप से रविवार और संक्रांति के दिनों में सूर्य पूजा का महत्व अधिक माना जाता है. कई लोग जल अर्पित करते समय 'सूर्याय नमः' या गायत्री मंत्र का जाप भी करते हैं.

तांबे के लोटे से सूर्य को जल चढ़ाना शुभ माना जाता है. मान्यता है कि इससे सकारात्मक ऊर्जा का

संचार होता है और ग्रह दोषों का प्रभाव कम होता है. ज्योतिष शास्त्र में भी सूर्य को आत्मा, सम्मान और नेतृत्व का कारक ग्रह माना गया है. इसलिए सूर्य उपासना को आत्मबल बढ़ाने वाला माना जाता है. वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखें तो सुबह की हल्की धूप शरीर के लिए बेहद लाभकारी मानी जाती है. स्वास्थ्य विशेषज्ञ बताते हैं कि सूर्योदय के समय सूर्य की किरणों में मौजूद विटामिन-डी शरीर की हड्डियों और प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत बनाने में मदद करता है. वहीं जल की धारा के बीच से सूर्य को देखने से आंखों और मन को शांति मिलने की बात भी कही जाती है.

सुबह जल्दी उठकर सूर्य को जल अर्पित करने की आदत व्यक्ति की दिनचर्या को भी अनुशासित बनाती है. योग और आयुर्वेद से जुड़े जानकारों का कहना है कि सूर्य नमस्कार और सूर्य उपासना शरीर में ऊर्जा का संचार करती है. इससे मानसिक तनाव कम होता है और सकारात्मक सोच विकसित होती है.

> ग्रामीण क्षेत्रों से लेकर शहरों तक, मंदिरों और घरों में सूर्य पूजा की परंपरा आज भी जीवित है . विशेषज्ञों का मानना है कि धार्मिक आस्था और वैज्ञानिक लाभों का यह सुंदर मेल भारतीय संस्कृति की विशेष पहचान है, जो पीढ़ियों से लोगों को प्रकृति और आध्यात्मिकता से जोड़ता आ रहा है .

घर के मुख्य द्वार पर स्वास्तिक बनाने की परंपरा

भारतीय संस्कृति में घर के मुख्य द्वार को केवल प्रवेश का स्थान नहीं, बल्कि सकारात्मक ऊर्जा के आगमन का मार्ग माना जाता है. यही कारण है कि प्राचीन समय से लोग घर के दरवाजे पर स्वास्तिक चिन्ह बनाते आ रहे हैं. धार्मिक मान्यताओं और वास्तु शास्त्र के अनुसार स्वास्तिक को शुभता, समृद्धि और मंगल का प्रतीक माना जाता है. आज भी देश के लाखों घरों में त्योहारों, पूजा-पाठ और विशेष अवसरों पर मुख्य द्वार पर स्वास्तिक बनाने की परंपरा निभाई जाती है.

धर्म ग्रंथों में स्वास्तिक को भगवान गणेश और मां लक्ष्मी से जोड़कर देखा गया है. मान्यता है कि घर के प्रवेश द्वार पर स्वास्तिक बनाने से नकारात्मक ऊर्जा दूर रहती है और घर में सुख-शांति का वातावरण बना रहता है. विशेष रूप से दीपावली, गृह प्रवेश, विवाह और अन्य मांगलिक कार्यों के दौरान लोग लाल रंग, हल्दी, कुमकुम या रोली से स्वास्तिक बनाते हैं. वास्तु विशेषज्ञों के अनुसार मुख्य द्वार पर स्वास्तिक चिन्ह लगाने से घर में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है. इसे शुभ संकेत माना जाता है और यह परिवार की उन्नति तथा आर्थिक समृद्धि का प्रतीक माना जाता है. कई लोग दरवाजे के दोनों ओर स्वास्तिक के साथ 'शुभ' और 'लाभ' भी लिखते हैं, जिसे व्यापार और परिवार के लिए मंगलकारी माना जाता है.

राशिफल

दिनांक- 24 से 30 मई 2026 तक

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास,
कोतवाली बाजार, जबलपुर मो.नं. 098266-21998

साप्ताहिक ग्रहस्थिति- इस सप्ताह सूर्य वृषभ राशि में, मंगल मेष राशि में, बुध वृषभ राशि में ता. 29 को 10/2 दिन से मिथुन राशि में, गुरू मिथुन राशि में, शुक्र मिथुन राशि में, शनि मीन राशि में, राहु कुम्भ राशि में, केतु सिंह राशि में और चन्द्रमा सिंह कन्या तुला और वृश्चिक राशि में संचरण करेगा.

ग्रहयोगों का प्रभाव :- ता. 25 को रोहिणीयां रवि के प्रभाव से गेहूं, जौ, चना, खांड, घी, तेल, तिल, ज्वार, बाजरा, सरसों, एरण्ड, अलसी, सूत में तेजी बनाए रखेगा. सोना और चांदी में कुछ मंदी आएगी. रूई, वस्त्र, शेयरों में साधारण तेजी होगी. ता. 30 को शुक्र पुनर्वसु नक्षत्र में प्रवेश करेगा, सोना, चांदी, रूई, कपास, जूट में मंदी आएगी, अनाजों में तेजी आएगी.

पर्व-व्रत-त्यौहार :

मंगलवार	26 मई को	गंगा दशहरा,
बुधवार	27 मई को	पुरूषोत्तमी एकादशी व्रत,
गुरूवार	28 मई को	प्रदोष व्रत,
शनिवार	30 मई को	पूर्णिमा व्रत

मेष

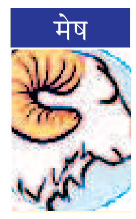

परिवार की खुशियों पर बड़ा खर्च होगा, जिसे आप पसंद करते हैं, उसके साथ कुछ समय गुजारकर खुशी मिलेगी, पारिवारिक उत्सवों में प्रसन्नता मिलेगी, उच्च अध्ययन में सफलता के आसार हैं, नौकरी की तलाश कर रहे लोगों को सफलता मिलेगी, विरोधी आपकी गतिविधियों पर नजर रखेगा, कामकाज में सावधानी रखें, अपने बिखरे हुये कार्यो को समेटने में सफलता मिलेगी.

वृषभ

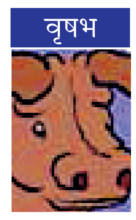

जिद में आकर गलत फैसला लेने से बचें, उच्च अध्ययन में सफलता मिलेगी, जिस योजना को लेकर काफी समय से प्रयास कर रहे थे, उसे अंजाम तक पहुंचाने में सफलता का योग है. नौकरी में स्थान बदलने का मौका मिल सकता है, घूमने फिरने के बहाने रिश्तेदारी में जा सकते हैं, उन्नति की संभावना है, वैवाहिक चर्चाओं में सफलता मिलेगी.

मिथुन

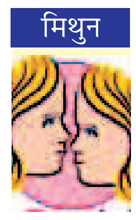

आपका पूरा ध्यान अपने कैरियर व भविष्य की योजनाओं की ओर रहेगा, नई योजनाओं को पूरा करने में सभी का सहयोग रहेगा, लोगों को अपनी बात समझाने में सफल रहेंगे, राह में आ रही मुस्किलों का सामना करने पर कामयाबी मिलेगी, कार्य स्थल पर नई शुरूआत का अनुभव होगा. व्यस्तता के कारण परिवार को वक्त देना मुश्किल होगा.

कर्क

पुरानी परेशानी से छुटकारा मिलेगा, सामाजिक और पारिवारिक कार्यक्रमों में आपकी भागीदारी बढ़ेगी. पार्टियों का दौर जारी रहेगा, दायरा बढ़ाने की कोशिश में रहेंगे. मौजमस्ती छोड़कर कुछ काम करने का मन बनेगा, संपत्ति संबंधी मामले सुलझेंगे, सप्ताहान्त में विरोधियों से सजग रहकर कार्य करें, बुजुर्ग की सलाह पर ध्यान दें.

सिंह

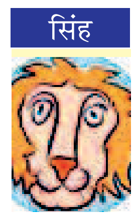

अभी तक की गई मेहनत का लाभ मिलेगा. पारिवारिक व सामाजिक जीवन में अपने संबंधों को फिर से घनिष्ठ बनाने में मदद मिलेगी, मानसिक संतोष हेतु कुछ दिन के लिये घर से दूर जा सकते हैं, पारिवारिक सुरक्षा हेतु निवेश करेंगे, कार्यक्षेत्र में अधिकारियों से मेलजोल बढ़ायें, यह आपके लिये फायदेमंद होगा. दूसरों की मदद कर अपने मन को खुशी देंगे,

कन्या

भाग्य अनुकूल बना रहने से मुश्किल कार्य भी आसानी से बनेगा, अपनी मंजिल तक पहुंचने के लिये आपने जितनी मेहनत की है, उसका लाभ मिलेगा, वैभव विलासिता पर खर्च होगा, जो लोग आपको नकारा समझते हैं, वे भी आपकी काबलियत की तारीफकरेंगे, सरकारी मामलों में कुछ विलंब हो सकता है, सौदे का मामला सुलझेगा.

तुला

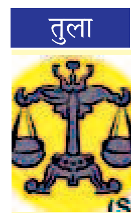

इस सप्ताह आर्थिक मामलों से निपटना होगा, पुराने कर्जो से छुटकारा पाने के लिये आपको योजनाबद्ध तरीके से आगे बढ़ना पड़ेगा. पारिवारिक आयोजनों में आप बढ़ चढ़कर हिस्सा लेंगे, बच्चों के कैरियर को लेकर चिन्ता रह सकती है, मानसिक तनाव की स्थिति से छुटकारा मिलेगा, जिस पर विश्वास कर रहे हैं, वे लोग आपका साथ छोड़ सकते हैं.

वृश्चिक

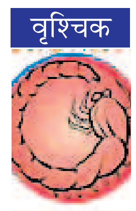

नये संपर्क और नये व्यक्ति लाभदायक रहेंगे, आप सिर्फ लाभ पर ही ध्यान नहीं देंगे, अपितु रिश्ते बनाने का भी प्रयास करेंगे. आर्थिक स्थिति में सुधार के कारण दूसरों के कार्य में ध्यान देंगे, किसी कार्य के लिये की गई यात्रा लाभदायक सिद्ध होगी, अपने लगाव व नजरिये में बदलाव का अवसर मिलेगा, व्यक्तिगत जीवन में कार्य में सामंजस्य से आप कामयाब रहेंगे.

धनु

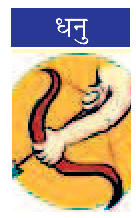

आपका यह सप्ताह प्रगति व सफलता लेकर आ रहा है, जो सपने आप देख रहे हैं उन्हें पूरा करने की राह बनेगी, अपनी वरिष्ठता और सामर्थ्य से ज्यादा जिम्मेदारी आने से आपका तनाव बढ़ सकता है, समाज में महत्वपूर्ण स्थान बनाने में सफल रहेंगे, कार्यस्थल पर अनिश्चय का माहौल बना रहेगा, संबंधों की फिर से समीक्षा करनी होगी, और दोस्त व दुश्मन में फर्क पहचानना पड़ेगा.

मकर

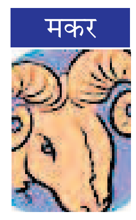

इस सप्ताह निजी संबंधों पर ध्यान देने का भरपूर समय मिलेगा, पुराने दोस्तों से मुलाकातों का दौर चलेगा, किसी भी योजना को आप इस तरह से अंजाम देंगे कि लोग आपकी तारीफ करेंगे, खर्च की अधिकता रहेगी, आपको आय के नये स्त्रोत तलाशना पड़ेंगे, घूमने का कार्यक्रम बन सकता है, दूसरों की मर्यादा का ध्यान रखें.

कुम्भ

आपको अपनी अभिरूचियों व खुशियों पर ध्यान देने का अवसर मिलेगा, आप जो चाहते हैं, उसके अनुसार अपने कार्य बनाते चले जायेंगे, भाग्य भी आपकी मदद करेगा, हिम्मत और विश्वास में वृद्धि होगी, कैरियर में पहले से अच्छे प्रस्ताव मिलेंगे, आध्यात्मिक व धार्मिक कार्यो में आपकी रूचि बढ़ेगी, तरक्की की ऊँचाईयों पर पहुंचेंगे, लेकिन व्यक्तिगत संबंधों को भी पूरा महत्व देंगे.

मीन

आपको अपने प्रयासों और मेहनत की बदौलत अच्छी सफलता मिलेगी, आपका मौलिक चिंतन आगे बढ़ने में आपकी मदद करेगा, कार्यक्षेत्र में आपको निरंतर सफलता मिलेगी, पारिवारिक व निजी जीवन में खुशियों का अनुभव होगा, जो लोग आपके कार्य में अड़चने खड़ी कर रहे हैं, वे सभी सहयोग करेंगे, मेहनत से लाभ प्राप्त करेंगे, बड़े निवेश के लिये सभी की राय जरूरी है.